

प्रश्न पत्र संख्या / Que. Paper No. : IV/20-21/Sanskrit/

प्रतिष्ठान द्वारा भरा जाएगा / To be filled in by Pratishtan

अंकों का विवरण / Details of Marks			
विषय / Subject	पूर्णांक / Max. Marks	प्राप्तांक / Marks obtained	परीक्षक के हस्ताक्षर Sign. of examiner
संस्कृत / Sanskrit	100		

वस्तुनिष्ठा: प्रश्नाः —

10 × 2 = 20

प्र.1. 'तुद्' धातोः परस्मैपदिनः (लट्लकारे) मध्यपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |           |                      |           |                      |
|-----------|----------------------|-----------|----------------------|
| (क) तुदथः | <input type="text"/> | (ख) तुदसि | <input type="text"/> |
| (ग) तुदथ  | <input type="text"/> | (घ) तुदतः | <input type="text"/> |

प्र.2. 'तनु' धातोः परस्मैपदिनः (लृट्लकारे) प्रथमपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |              |                      |                |                      |
|--------------|----------------------|----------------|----------------------|
| (क) तनिष्यति | <input type="text"/> | (ख) तनिष्यन्ति | <input type="text"/> |
| (ग) तनिष्यतः | <input type="text"/> | (घ) तनिष्यामि  | <input type="text"/> |

प्र.3. 'रुध्' धातोः परस्मैपदिनः (लट्लकारे) प्रथमपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |             |                      |               |                      |
|-------------|----------------------|---------------|----------------------|
| (क) रुणद्धि | <input type="text"/> | (ख) रुन्धन्ति | <input type="text"/> |
| (ग) रुणध्मि | <input type="text"/> | (घ) रुन्धः    | <input type="text"/> |

प्र.4. 'चुर' धातोः परस्मैपदिनः (लङ्लकारे) मध्यमपुरुषे द्विवचनस्य किं रूपं भवति -

- |               |                      |             |                      |
|---------------|----------------------|-------------|----------------------|
| (क) अचोरयताम् | <input type="text"/> | (ख) अचोरयः  | <input type="text"/> |
| (ग) अचोरयत    | <input type="text"/> | (घ) अचोरयम् | <input type="text"/> |

प्र.5. 'क्री' धातोः परस्मैपदिनः (लृट्लकारे) उत्तमपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |                |                      |                |                      |
|----------------|----------------------|----------------|----------------------|
| (क) क्रेष्यामः | <input type="text"/> | (ख) क्रेष्यामि | <input type="text"/> |
| (ग) क्रेष्यासि | <input type="text"/> | (घ) क्रेष्यथ   | <input type="text"/> |

प्र.6. 'तुद्' धातोः आत्मनेपदिनः (लट्लकारे) प्रथमपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |           |                      |             |                      |
|-----------|----------------------|-------------|----------------------|
| (क) तुदते | <input type="text"/> | (ख) तुदन्ते | <input type="text"/> |
| (ग) तुदसे | <input type="text"/> | (घ) तुदे    | <input type="text"/> |

प्र.7. 'रुध्' धातोः आत्मनेपदिनः (विधिलिङ्लकारे) मध्यमपुरुषे बहुवचनस्य किं रूपं भवति -

- |                 |                      |               |                      |
|-----------------|----------------------|---------------|----------------------|
| (क) रुन्धीध्वम् | <input type="text"/> | (ख) रुन्धीथाः | <input type="text"/> |
| (ग) रुन्धीत     | <input type="text"/> | (घ) रुन्धीरन् | <input type="text"/> |

प्र.8. 'तनु' धातोः परस्मैपदिनः (लोट्लकारे) मध्यमपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |                |                      |           |                      |
|----------------|----------------------|-----------|----------------------|
| (क) तनु/तनुतात | <input type="text"/> | (ख) तनुत  | <input type="text"/> |
| (ग) तनवाव      | <input type="text"/> | (घ) तनोतु | <input type="text"/> |

प्र.9. 'चुर' धातोः आत्मनेपदिनः (लङ्लकारे) मध्यमपुरुषे एकवचनस्य किं रूपं भवति -

- |                |                      |               |                      |
|----------------|----------------------|---------------|----------------------|
| (क) अचोरयेथाम् | <input type="text"/> | (ख) अचोरयथाः  | <input type="text"/> |
| (ग) अचोरये     | <input type="text"/> | (घ) अचोरयावहि | <input type="text"/> |

प्र.10. 'क्री' धातोः आत्मनेपदिनः (लोट्लकारे) उत्तमपुरुषस्य द्विवचनस्य किं रूपं भवति -

- |               |                      |                |                      |
|---------------|----------------------|----------------|----------------------|
| (क) क्रीणावहै | <input type="text"/> | (ख) क्रीणाताम् | <input type="text"/> |
| (ग) क्रीणामहै | <input type="text"/> | (घ) क्रीणीष्व  | <input type="text"/> |

रिक्तस्थानानि पूरयत —

5 × 2 = 10

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्र.11. तनोति	-----	तन्वन्ति
प्र.12. तुदानि	तुदाव	-----
प्र.13. क्रीणामि	-----	क्रीणीमः
प्र.14. चोरयाणि	चोरयाव	-----
प्र.15. -----	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

श्लोकानां रिक्तस्थानं पूरयन्तु —

10 × 2 = 20

- |   |       |
|---|-------|
| प्र.16. न संशयमनारुह्य नरो              | ----- |
| प्र.17. मातृवत्परदारेषु                 | ----- |
| प्र.18. विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा     | ----- |
| प्र.19. यस्मिन्देशे न सम्मानो           | ----- |
| प्र.20. यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि | ----- |
| प्र.21. असाधना वित्तहीना                | ----- |
| प्र.22. न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं         | ----- |
| प्र.23. दुर्जनः प्रियवादी च             | ----- |
| प्र.24. उत्तमस्याऽपि वर्णस्य            | ----- |
| प्र.25. माता मित्रं पिता चेति           | ----- |

संस्कृत/Sanskrit	वेदभूषण चतुर्थ वर्ष/Fourth Year	SET-A
------------------	---------------------------------	-------

सुमेलितं कुरुत (उपर्युक्तेन अर्थेन सह योजयत) —

8 × 1.5 = 12

- |         |                              |          |
|---------|------------------------------|----------|
| प्र.26. | तत्र रात्रौ पक्षिणः          | खादति    |
| प्र.27. | व्याघ्रः मानुषं              | निवसन्ति |
| प्र.28. | मूषकराजः गण्डकीतीरे चित्रवने | धर्मः    |
| प्र.29. | अहिंसा परमो                  | ब्रवीमि  |
| प्र.30. | अस्ति गौडविषये कौशाम्बी नाम  | निवसति   |
| प्र.31. | अतोऽहं                       | नगरी     |

सूत्रस्य पदपरिचयं प्रयच्छन्तु —

3 × 2 = 6

प्र.32. अव्ययादाप्सुपः

---



---

प्र.33. कृन्मेजन्तः

---



---

प्र.34. तद्धितश्चाऽसर्वविभक्तिः

---



---

उत्तरं लिखतु —

32

प्र.35. तुद् व्यथने परस्मैपदिनः लृट् लकारस्य रूपाणि लिखत ।

---



---



---

प्र.36. तनु विस्तारे परस्मैपदिनः लोट् लकारस्य रूपाणि लिखत ।

---



---



---

संस्कृत/Sanskrit	वेदभूषण चतुर्थ वर्ष/Fourth Year	SET-A
------------------	---------------------------------	-------

प्र.37. चुर स्तेये परस्मैपदिनः लट्लकारस्य रूपाणि लिखत ।

---

---

---

प्र.38. क्री (डुक्रीञ्) द्रव्यविनिमये परस्मैपदिनः लट्लकारस्य रूपाणि लिखत ।

---

---

---

प्र.39. तुद् व्यथने परस्मैपदिनः लङ्लकारस्य रूपाणि लिखत ।

---

---

---

प्र.40. तुद् व्यथने आत्मनेपदिनः लट्लकारस्य रूपाणि लिखत ।

---

---

---